पुरस्कार

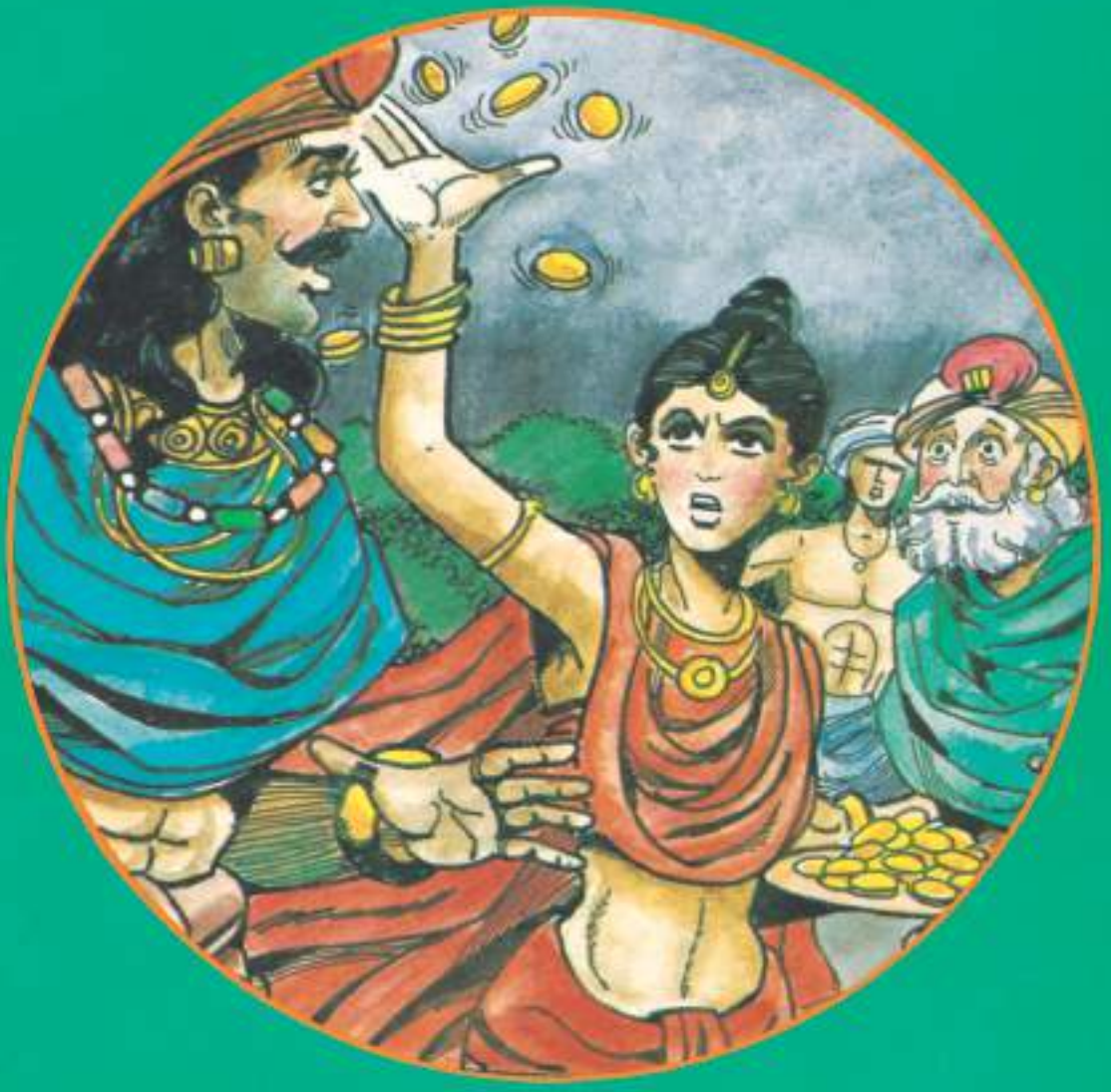

चित्राँकन तापस गुहा

लेखक जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के महान कवि होने के साथ-साथ एक महान कलाकार, नाटककार और उपन्यासकार भी थे। उनका जन्म काशी के एक सम्पन्न घराने में हुआ। प्रसाद जी बहुत ही शील स्वभाव वाले, मधुर, मिलनसारी व्यक्ति थे। अपनी व्यवहारिक बुद्धिमत्ता के कारण वे सबके प्रिय थे। संवेदनशील होने के कारण समाज के उसूलों पर सवाल उठाना उनके लिए कोई अनोखी बात नहीं थी। किसी भी मत को वह अंतिम नहीं मानते थे। इन्हीं गुणों के कारण उनकी कहानियों ने भी साहित्य में विशेष स्थान पाया।

पुरस्कार में भी उनकी यही विचारधाराएँ झलकती दिखाई देती हैं।

KATHA

पहला संस्करण 1994, दूसरा संस्करण 2004, तीसरा संस्करण 2009
चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © कथा, 1994
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-85586-16-8

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।

ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 2652 4350, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org
इंटरनेटः http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

पुरस्कार

लेखक: **जयशंकर प्रसाद**
चित्राँकन: **तापस गुहा**

कथा, नई दिल्ली

बरसात का मौसम। आकाश में काले-काले बादलों की घुमड़। बिजली की गड़गड़ाहट। ज़ोर से हवा चली और कुछ बूँदें बरसीं। जयघोष के बीच महाराज की सवारी आई।

आज कोशल देश में कृषि-उत्सव मनाया जा रहा था।

इस दिन महाराज को एक दिन के लिए किसान बनना पड़ता था। ज़मीन के एक चुने हुए टुकड़े में वे हल चलाते। फिर बीज बोते थे।

ज़मीन के असली मालिक को ज़मीन की चार गुना रकम देते थे। और खेत राजा के हो जाते थे।

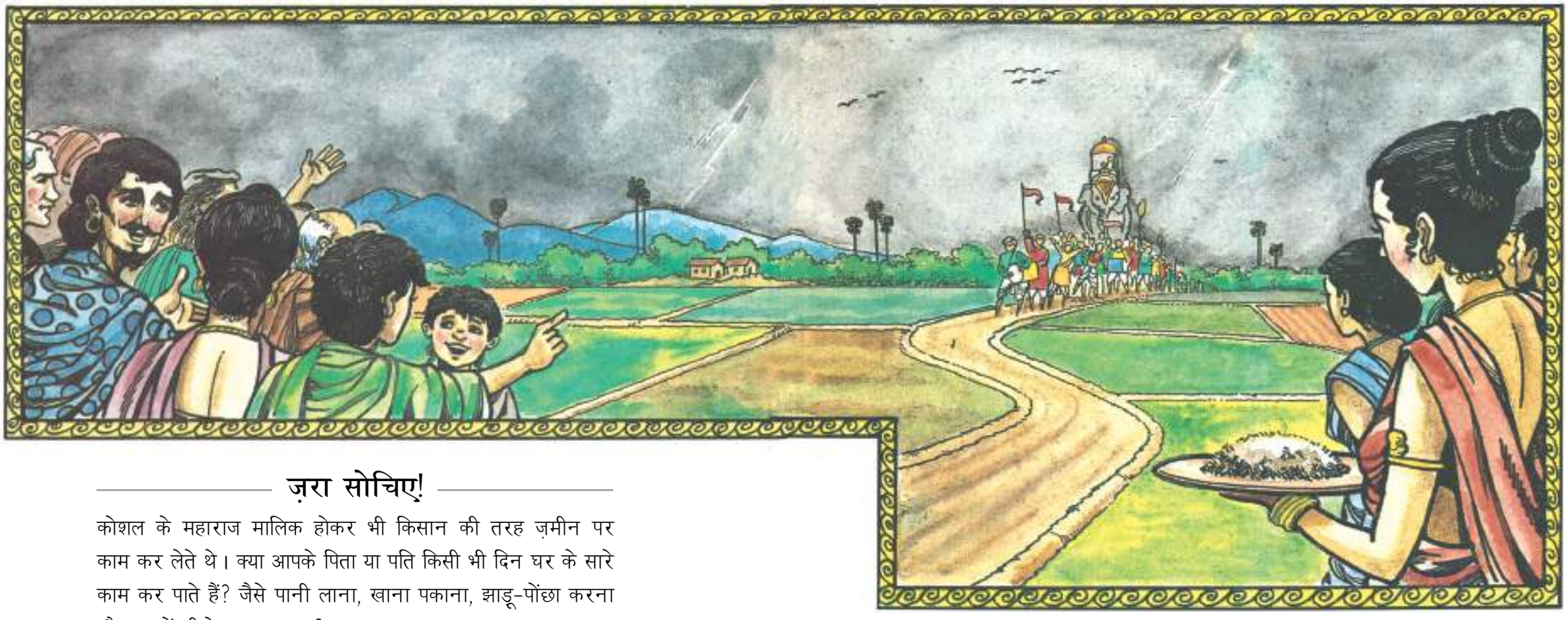

ज़रा सोचिए!

कोशल के महाराज मालिक होकर भी किसान की तरह ज़मीन पर काम कर लेते थे। क्या आपके पिता या पति किसी भी दिन घर के सारे काम कर पाते हैं? जैसे पानी लाना, खाना पकाना, झाड़ू-पोंछा करना और बच्चों की देखभाल करना?

उस साल मधूलिका की ज़मीन चुनी गई थी। कोशल के सभी निवासी उसकी ज़मीन पर जमा हो रहे थे।

राजा सवारी से उतरे। सुन्दर लड़कियों ने मंगलगान गाया। पंडितों ने मंत्र पढ़े। फिर राजा ने ज़मीन पर हल चलाना शुरू किया। लोगों ने फूल और खील बरसाए।

कोशल का यह उत्सव दूर-दूर तक मशहूर था।

इसमें भाग लेने के लिए दूसरे राज्यों से भी लोग आते थे। उस साल मगध का राजकुमार अरूण आया था।

हल चलाने के बाद राजा को बीज बोना था। थाल में बीज उठाए मधूलिका राजा के साथ चल रही थी। सब लोग राजा को देख रहे थे। लेकिन अरूण मधूलिका को!

ज़रा सोचिए!

इस कहानी में यह ज़मीन मधूलिका की है। क्या आप जानती हैं कि कानून के अंतर्गत, एक स्त्री भी ज़मीन की मालिक बन सकती है? स्त्रियों और लड़कियों का अपने बाप-दादा की संपत्ति पर उतना ही अधिकार है जितना लड़कों का।

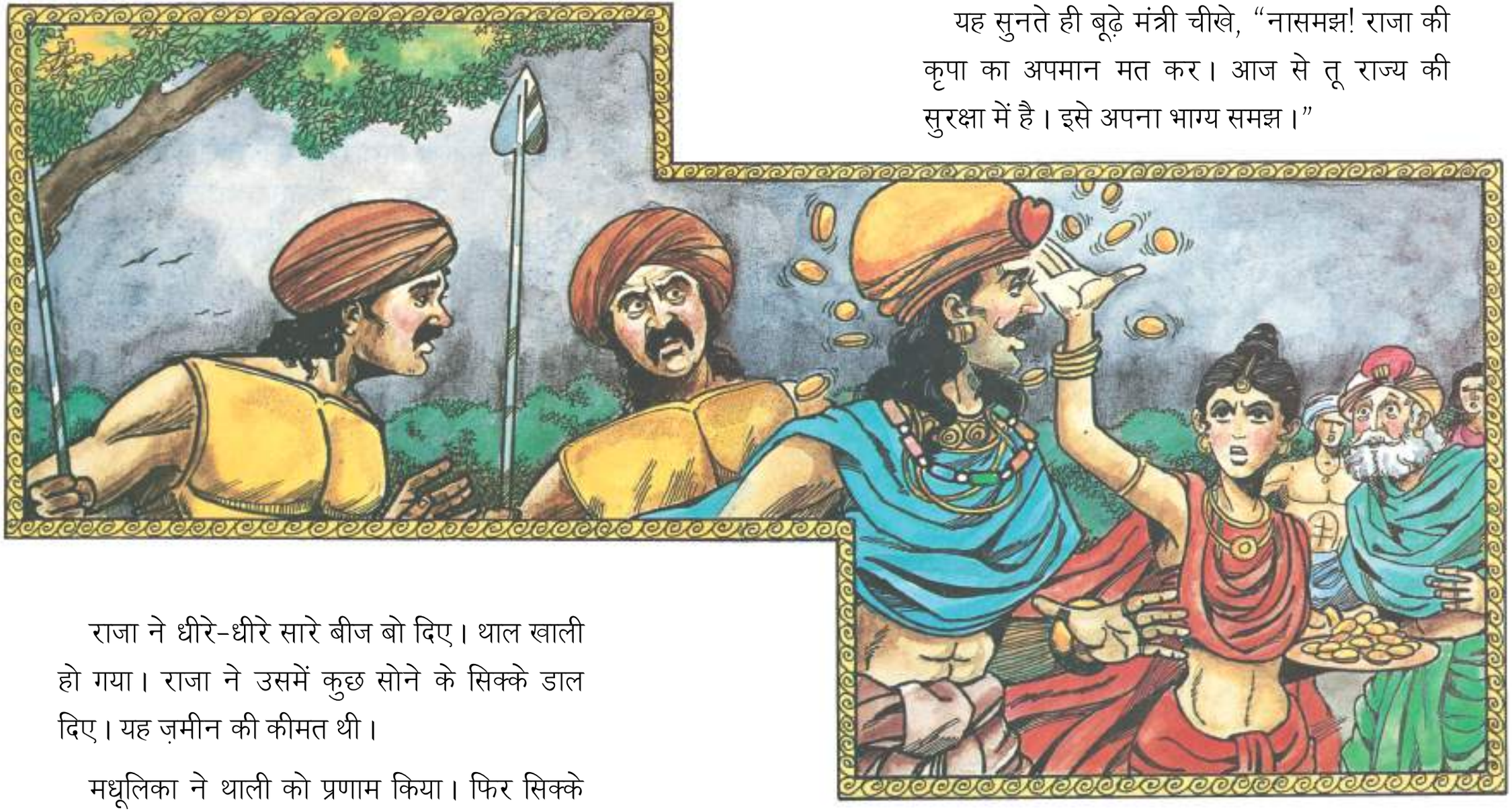

राजा ने धीरे-धीरे सारे बीज बो दिए। थाल खाली हो गया। राजा ने उसमें कुछ सोने के सिक्के डाल दिए। यह ज़मीन की कीमत थी।

मधूलिका ने थाली को प्रणाम किया। फिर सिक्के उठाकर राजा पर वार दिए। और कहा, "महाराज! यह मेरे बाप-दादा की ज़मीन है। मैं इसे ऐसे ही आप को देने को तैयार हूँ। पर बेचूँगी नहीं।"

यह सुनते ही बूढ़े मंत्री चीखे, "नासमझ! राजा की कृपा का अपमान मत कर। आज से तू राज्य की सुरक्षा में है। इसे अपना भाग्य समझ।"

ज़रा सोचिए!

जिस तरह राजा ने मधूलिका की ज़मीन ले ली, उसी तरह आजकल सड़क, बाँध या कारखाने आदि बनाने के लिए सरकार भी लोगों की ज़मीन ले लेती है। पर मधूलिका ने राजा का सामना किया और ज़मीन के बदले ज़मीन ली। पर क्या आप भी अपने हक के लिए लड़ सकेंगी?

राजा ने पूछा, "कौन है यह लड़की?"

"महाराज! यह वीर सिंहमित्र की बेटी है। सिंहमित्र जिसने वाराणासी की लड़ाई में कोशल को मगध से बचाया था।"

राजा कुछ सोचने लगे। फिर बिना कुछ कहे अपने शिविर की ओर लौट गए।

जयघोष के साथ उत्सव पूरा हुआ।

रात हुई पर राजकुमार अरूण की आँखों में नींद कहाँ? अपने घोड़े पर सवार वह बाहर निकल पड़ा। घूमते-घूमते एक बरगद के पेड़ के पास पहुँचा।

पेड़ के नीचे, हाथ पर सिर रखकर मधूलिका सो रही थी। सोई हुई मधूलिका बहुत ही सुंदर और भोली जान पड़ती थी! अरूण चुपचाप, एकटक उसे देख रहा था।

अचानक कोयल बोल उठी। मधूलिका की नींद टूटी। सामने एक अपरिचित को देख वह उठ बैठी।

अरूण बोला, "मैं मगध का राजकुमार हूँ। आज सुबह तुम्हें उत्सव में देखा था। तभी से तुम्हारे साहस और सुंदरता का पुजारी बन गया हूँ।"

"मज़ाक न करो, राजकुमार। मैं आज बहुत दुखी हूँ। मेरा अपमान न करके मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो," कहकर मधूलिका वहाँ से चल दी।

मायूस राजकुमार लौट गया। मधूलिका कुछ देर तक उड़ती हुई धूल को देखती रही। आँखों में आँसू आ गए।

मन ही मन मधूलिका ने जीवन को एक नए सिरे से शुरू करने का निश्चय किया।

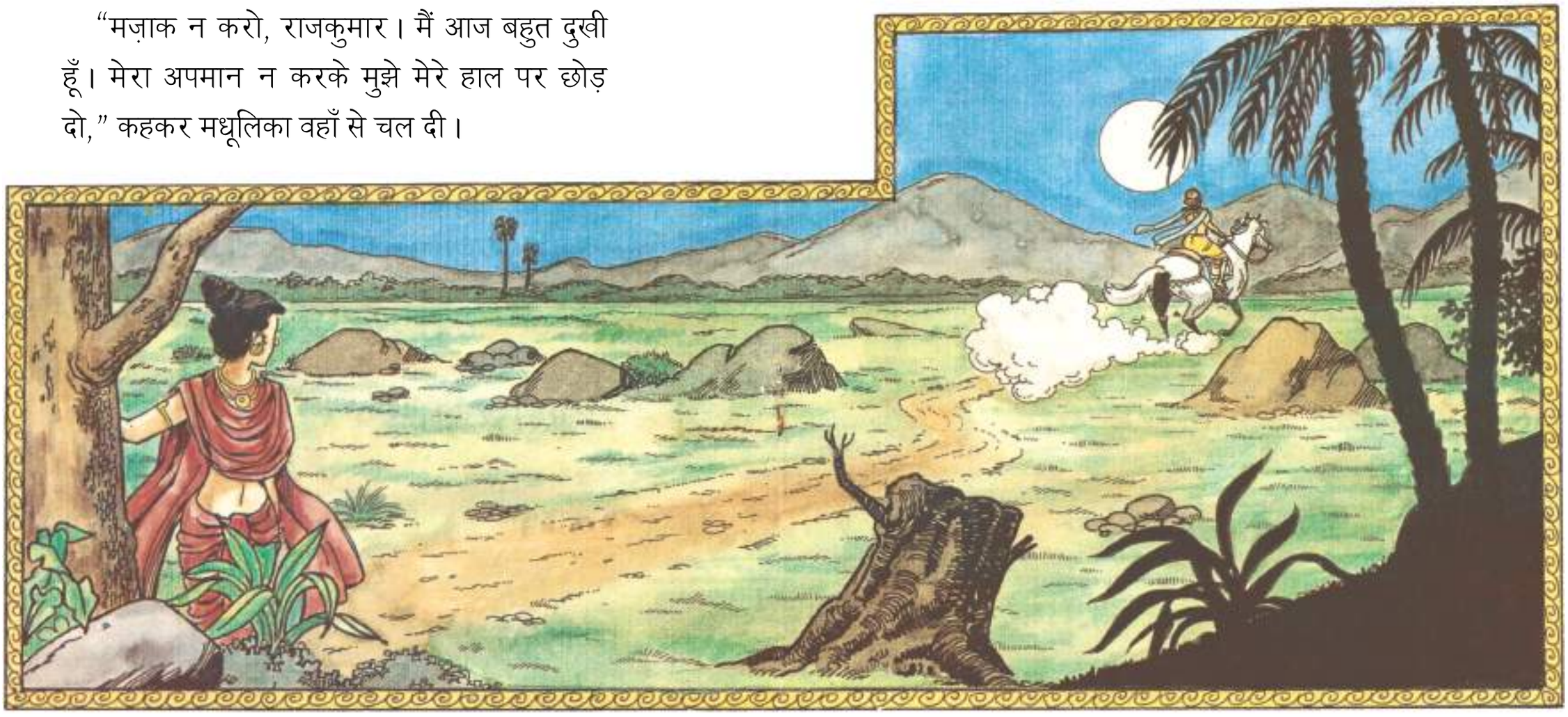

अपनी ज़मीन खोकर मधूलिका दूसरों के खेतों में कड़ी मेहनत करने लगी। रूखा-सूखा जो मिलता, खाकर अपनी झोंपड़ी में सो जाती।

इस तरह तीन साल बीत गए।

सर्दियों की एक रात। मेघों से भरा आकाश। रह-रहकर बिजली चमक उठती थी। मधूलिका अपनी झोंपड़ी में बैठी ठिठुर रही थी। आज बहुत दिनों बाद उसे बीती हुई वह बात याद आई। राजकुमार अरूण की प्यार-भरी बातें! अब उसे दुख हो रहा था - उसे अरूण की बात मान लेनी चाहिए थी!

तभी, दरवाज़े पर खट-खट हुई। "कौन है यहाँ? राही को शरण चाहिए," बाहर से आवाज़ आई।

दरवाज़ा खोलते ही बिजली चमकी। मधूलिका चिल्ला उठी, "राजकुमार!" अरूण भी उसे देखकर हैरान था। कुछ रुककर बोला, "मैं बाग़ी हूँ। मुझे मगध से निकाल दिया गया है। मैं कोशल में रहने आया हूँ।"

ज़रा सोचिए!

दुख और कष्ट के समय मधूलिका को अरूण की याद आई। इन हालात में अरूण की प्यार-भरी बातों को याद करने का क्या अर्थ है? अरूण का राजकुमार या अमीर होना अथवा दुख की घड़ी में किसी प्रिय का साथ चाहना?

मधूलिका हँसकर बोली, "आपका स्वागत है।"

बारिश बंद हो चुकी थी। कोहरे से धुली हुई चाँदनी में अरूण और मधूलिका बरगद के पेड़ के नीचे जा बैठे। मधूलिका आज बहुत खुश थी। अरुण कुछ संभल-संभलकर बातें कर रहा था।

"मैं नया राज्य स्थापित करूँगा। तुम्हें राजरानी बनाऊँगा। तुम मुझसे प्यार करती हो न, मधूलिके!" अरुण ने उसके हाथों को दबाकर पूछा।

राजकुमार अरुण के पास बैठकर मधूलिका अपने दुखों को भूल-सी गई थी। सपनों की दुनिया में खो गई थी वह, जब अरुण बोला, "नये राज्य की स्थापना करने में तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।"

"जो कहोगे, वही करूँगी!" मधूलिका ने कहा।

और अरुण उसे अपनी योजना बताने लगा।

मधूलिका राजा से मिलने उनके महल में गई। महाराज को प्रणाम करके बोली, "तीन बरस हुए देव! मेरी ज़मीन खेती के लिए ली गई थी।"

"अच्छा तो तुम उसकी कीमत माँगने आई हो। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?"

"मुझे किले के दक्षिणी नाले के पास अपने खेत के बराबर की ज़मीन चाहिए।"

राजा मान गए।

किले के दक्षिणी नाले के पास की ज़मीन सैनिक-महत्व रखती थी। वहाँ सैनिक किले पर पहरा देते थे। ज़मीन मधूलिका को मिल जाने के बाद सैनिक वहाँ से हटा लिए गए।

अरुण अपनी सैनिक-टुकड़ी के साथ घने जंगल में छुप गया। वह वहाँ से राजा के किले पर हमला करने वाला था। यही उसकी योजना थी।

मधूलिका का दिल उसे धिक्कार रहा था। "मेरे पिता ने कोशल को बचाया था। उनकी बेटी होकर मैं दुश्मन की मदद कर रही हूँ। नहीं, कभी नहीं!"

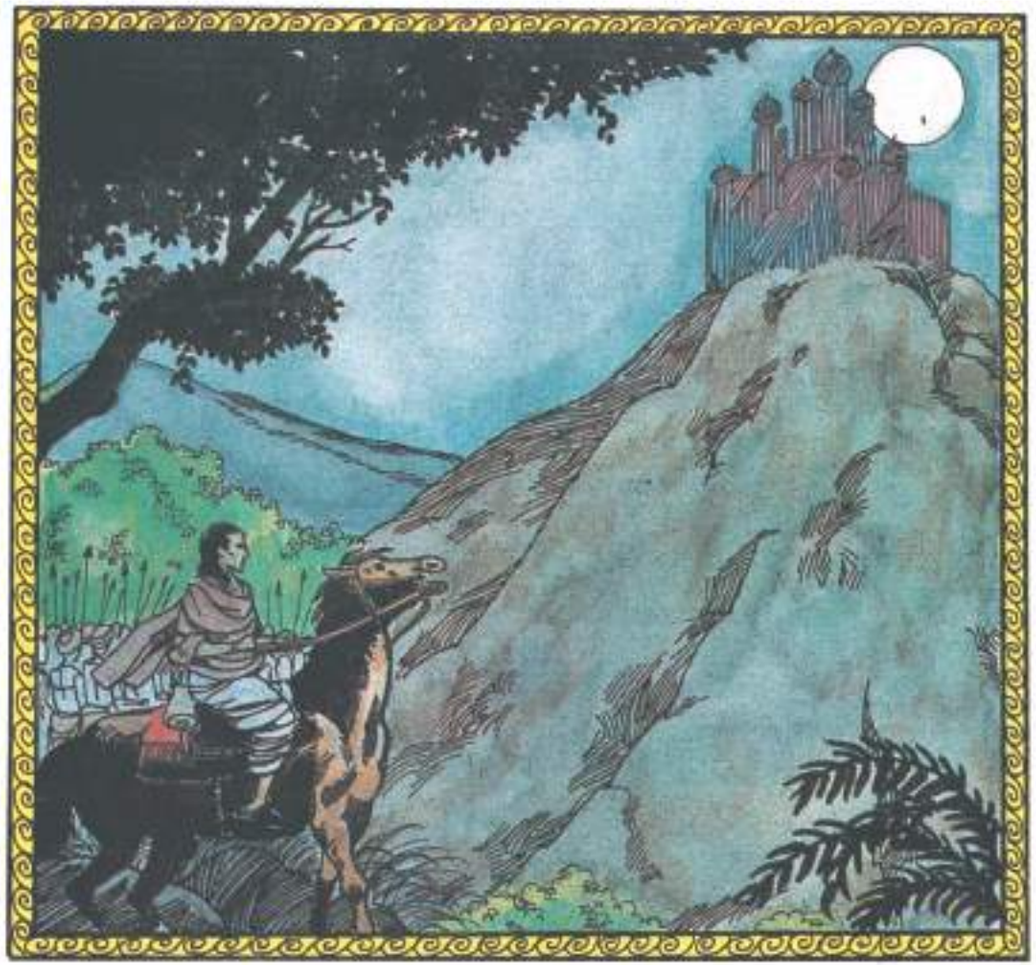

यह सोचकर वह इधर-उधर भागने लगी। सामने से कोशल देश के सेनापति अपनी सैनिक-टुकड़ी के साथ आते हुए दिखाई दिए। वह उनके पैरों पर गिर पड़ी और बोली। "आज रात किले पर चढ़ाई होगी। डाकू दक्षिणी नाले की ओर से आएँगे। जल्दी कुछ कीजिए।"

सैनिक दक्षिणी नाले की ओर भागे।

हमले की तैयारी करता हुआ अरुण पकड़ा गया।

इस तरह उसकी योजना बेकार हो गई। उसे बंदी बना लिया गया। राजा ने उसे प्राणदंड दिया।

फिर मधूलिका बुलाई गई। वह पागल-सी आकर खड़ी हो गई। राजा ने कहा, "मधूलिका, मनचाहा पुरस्कार माँगो।"

"मुझे भी प्राणदंड मिले!" कहती हुई वह बंदी अरुण के पास जा खड़ी हुई।

ज़रा सोचिए!

मधूलिका ने प्राणदंड का पुरस्कार माँगकर अपने देश के लिए अपने प्रेम को मिटा दिया। आप उसकी जगह पर होते तो क्या करते? मनुष्य किस हद तक देशप्रेम को अपने से ऊँचा स्थान दे सकता है?

शब्द बनाएँ

बाहर	निकाल	सोच
कर	मधूलिका	पिता

ये छः शब्द इस पुस्तक की कहानी में से लिए गए हैं।
इन शब्दों से हमें ये तेरह पद (मात्रा सहित अक्षर) मिले हैं।

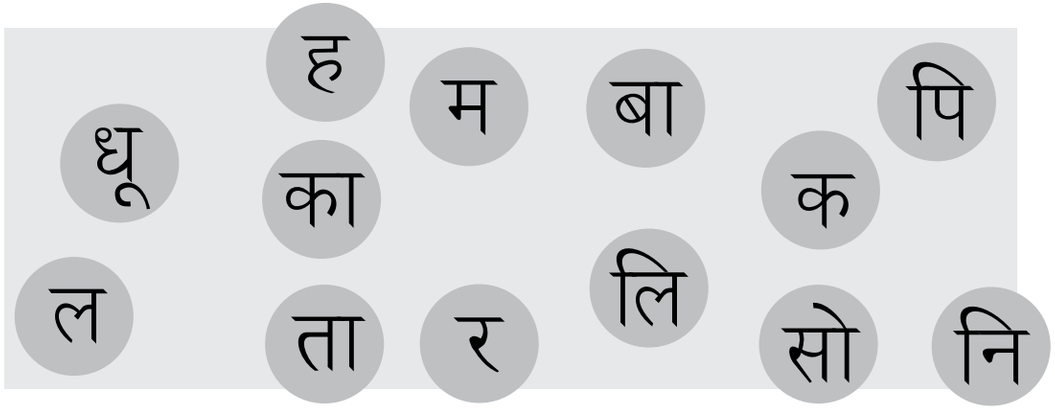

अब इन तेरह पदों से हमने चौबीस शब्द बनाए हैं।
इन शब्दों को देखने के लिए पृष्ठ को उल्टा करें।
अब देखें इन पदों से आप और कितने शब्द बना सकते हैं।
ध्यान रहे मात्रा अक्षर से अलग न हो।

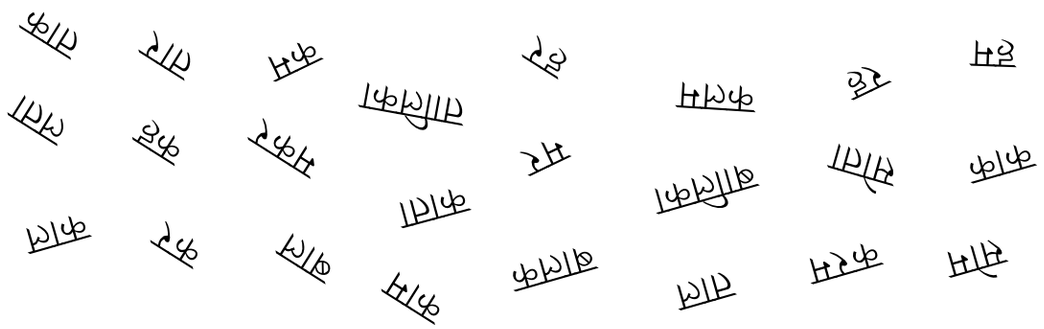

अपनी शब्दावली बढ़ाएँ

दाएँ ओर दिए गए शब्दों में से एक शब्द बाएँ ओर दिए गए शब्द का अर्थ है। सही अर्थ बताएँ। (किताब पर चिन्ह न लगाएँ। एक अलग काग़ज़ पर अपने जवाब लिखें और खेल के अंत में अपने जवाब मिलाएँ। हर सही जवाब के लिए अपने को एक अंक दें।)

1. बरसात	क	बादल	5. कृपा	क	दुख
	ख	वर्षाकाल		ख	दया
	ग	पानी		ग	सम्मान
2. आकाश	क	सूरज	6. भाग्य	क	किस्मत
	ख	नीला		ख	सफ़लता
	ग	आसमान		ग	साहस
3. रकम	क	कम	7. मदद	क	सलाह
	ख	कीमत		ख	कोशिश
	ग	अधिक		ग	सहायता
4. दुश्मन	क	मित्र	8. पुरस्कार	क	इनाम
	ख	शत्रु		ख	अपमान
	ग	सलाहकार		ग	सम्मान

आपके नम्बर:

6 से 8 अंक - बहुत बढ़िया
4 से 6 अंक - बढ़िया
4 से कम - पढ़ने का और अभ्यास करें।

सही जवाब:

1. ख 2. ग 3. ख 4. ख 5. ख 6. क 7. ग 8. क

हम किस हद तक देशप्रेम को अपने से ऊँचा स्थान दे सकते हैं? इतिहास में हमने कई वीर स्त्रियों के बारे में पढ़ा है, जिन्होंने देश को अपने से बढ़कर समझा। ***पुरस्कार*** ऐसी ही एक नि:स्वार्थ स्त्री की कहानी है।

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइऐ अपने देश के साहित्य का खजाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिए!

इस पुस्तक की कहानी हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध लेखक **जयशंकर प्रसाद** ने लिखी है।